ज्ञानसरोवर माउन्ट आबू में राष्ट्रीय महिला सम्मेलन एवं राजयोग शिविर "खुशहाल महिला, खुशहाल परिवार" (दिनांक 19 जुलाई 2019 से 23 जुलाई 2019 तक) तक आयोजित हुआ जिसमें भारत एवं नेपाल से लगभग 400 गणमान्य एवं प्रसिद्ध महिलाओं ने भाग लिया ।

स्वागत सत्र

महिला प्रभाग द्वारा ज्ञानसरोवर में कार्यक्रम में अपनी शुभकामनायें रखते हुए दिल्ली से इंदिरागांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय स्कूल ऑफ एजुकेशन की निर्देशिका बहन प्रो. सरोज पांडे ने अपने वक्तव्य में कहा कि हैप्पीनेस का पैमाना हर किसी के लिए अलग है जैसे कि लेबर महिला को अपने काम के बीच पांच मिनट अपने बच्चे को फीड कराने में ही उसकी खुशी है। उन्होंने बताया कि परिवार में खुशी न होने के कई कारण हैं जैसे कि आपस में कम्युनिकेशन कम हो गया है, आपस में कोओपरेशन नहीं हैं और conflict resolution बिल्कुल खत्म हो गया जिससे परिवार में आपस में दुरियां बढती जा रही हैं। उन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए शुभकामनायें दी।

कार्यक्रम में नेपाल से विशेषरूप से पधारी बहन रजनी अमात्या जोंचे, पार्लियामेंट स्टेट की माननीय सदस्य ने अपने वक्तव्य में कहा कि महिलाओं को बचपन से अपने बच्चों में अच्छे संस्कार डालने चाहिए ताकि बड़े होकर वे एक अच्छे इन्सान बन सकें और समाज में सकारात्मक माहौल बनाने में अपना योगदान दे सकें।

महिला प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्रह्माकुमारी डॉ. सविता ने अपने वक्तव्य में प्रभाग द्वारा की जा रही गतिविधियों से सभी को अवगत कराया। उन्होंने बताया कि महिलाओं की स्थिति पहले से बेहतर हुई है। महिला प्रभाग द्वारा बहुत से अभियान निकाले गये हैं जिनमें साल 2001

में महिला सशक्तिकरण वर्ष के दौरान **महिला आध्यात्मिक सशक्तिकरण अभियान**, 2014–15 में 'नारी सुरक्षा – हमारी सुरक्षा' एवं उसके पश्चात् 'बेटी बचाओं – सशक्त बनाओ'। महिलायें सरकार द्वारा बनाये गये महिला संरक्षण कानून की अनभिज्ञता, कानूनी प्रक्रिया की जटिलता एवं समाज के डर से अत्याचार का विरोध नहीं करती। पुरूषप्रधान समाज में अभी भी नारी के प्रति भेदभाव, शोषण व अत्याचार होता है। महिला प्रभाग ऐसे सम्मेलन आयोजित कर महिलाओं के अन्दर आध्यात्मिक व नैतिक जागृति लाने का प्रयास कर रहा है। इस प्रभाग ने पारिवारिक मूल्यों की स्थापना के लिए एक कोर्स भी बनाया है जिससे महिलायें सहज रूप से स्वयं, परिवार एवं समाज के लिए श्रेष्ठ कार्य कर सकती हैं। यह विश्व की सबसे बडी, बहनों द्वारा संचालित आध्यात्मिक संस्था है जिसमें 45000 से अधिक समर्पित बहनें, भाइयों के सहयोग से यह श्रेष्ठ कार्य कर रही हैं।

महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी चक्रधारी ने अपने आर्शीवचन में कहा कि महिला परिवार की धूरी है एवं उसको दो शब्द प्रशंसा के बोल देंगे तो वह बहुत ही खुश होगी और परिवार को भी खुश रखेंगी। सभी प्रतिभागियों को उन्होंने कहा कि आप अपने पीहर घर आये हैं और यहां से मां का अनुभव करके जाना है।

इस सत्र का कुशल संचालन वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका एवं महिला प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्रह्माकुमारी शारदा बहन ने बडी कुशलतापूर्वक किया।

उदघाटन सत्र

राष्ट्रीय महिला आयोग अध्यक्षा श्रीमति रेखा शर्मा ने कहा कि त्याग, तपस्या व सेवा की प्रतिमूर्ति महिलाओं को मेडिटेशन के जरिए अपने सार्मथ्य को जागृत करना होगा। रिश्तों में बढते स्वार्थ को समाप्त करने के लिए विशेषकर महिलाओं को आत्मचिंतन करने की जरूरत है। महिला विभिन्न रूपों में परिवार, समाज व देश की सेवा करती है। महिलाओं की चार दीवारों से बाहर निकल कर राष्ट्र को अपना परिवार समझकर सेवा करने की जिम्मेवारी बढ गई है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से नई पीढी की मानसिकता में आ रहे बदलाव परिवारों में दरारें पैदा कर रहा है। स्वयं को सशक्त बनाने वाले ही दूसरों को सशक्त बना सकते हैं। यह बात उन्होंने मुख्य अतिथि की हैसयित से ब्रह्माकुमारी संगठन के ज्ञान सरोवार अकेडमी परिसर में महिला प्रभाग की ओर से **खुशहाल महिला खुशहाल परिवार** विषय पर आयोजित चार दिवसीय सम्मेलन के उद्घटान सत्र को संबोधित करते हुए कही।

इस अवसर पर आगे उन्होंने ने कहा कि मृगतृष्णा समान अनावश्यक इच्छाओं के चलते महिला अपनी आंतरिक शक्तियों को नहीं पहचान पाती है। वास्तविक शक्ति हमारी आत्मा में होती है जो शक्ति निश्चित तौर पर हमारे जीवन को बेहतर बनाती है। यहां की विचारधारा की बदौलत संसार के अनेक समुदाय एक माला में पिरोये जा रहे है। इस संस्था से जुडकर बहनों ने अपने जीवन को विश्व की सेवा के लिए समर्पित कर दिया है जो बहुत बडी सेवा है। संस्था के साथ जुडकर समाज सेवा करना हम सबका दायित्व बनता है।

राजस्थान सरकार की महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमति ममता भूपेश ने अपने वक्तव्य में कहा कि मेडिटेशन तामसिक विचारों को नष्ट करता है। सशक्त होने का अर्थ यह नहीं कि महिलायें पढ़ लिख जायें बल्कि स्वयं को आंतरिक शक्तियों से ऊर्जा का संचार करने वाली महिलायें ही सशक्त महिलायें हैं। महिलाओं को अपने विचारों से अपनी बेटियों को राष्ट्र निर्माण के लिए तैयार करना चाहिए। आध्यात्मिक शक्तियों की ऊर्जा से परिपूर्ण ब्रह्माकुमारी बहनों का सानिध्य समाज को सकारात्मक दिशा में ले जाने में सक्षम है। विश्व के पुनः उत्थान के लिए ब्रह्माकुमारी संगठन की बहनें अपना अमूल्य समय देकर राजस्थान की धरनी माउंट आबू से भारतीय संस्कृति की रोशनी विश्व के पांचों महाद्वीपों में पहुंचा रही हैं। पति–पत्नी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, उन्होंने बताया कि मेरे पति ने अपने जीवन में ब्रह्माकुमारी संगठन की शिक्षाओं को अपने जीवन में ग्रहण कर मेरे जीवन को भी सकारात्मक बनाने में अहम भूमिका अदा की है।

राजस्थान प्रदेश कांगेस कमेटी की सचिव एवं प्रवक्ता बहन संगीता गर्ग ने अपने वक्तव्य में कहा कि किसी भी परिस्थिति में महिलाओं को आशावादी मानसिकता नहीं छोडनी चाहिए। मेडिटेशन के जरिए ईश्वर से मन के तार जोड़ने पर अलौकिक शक्ति प्राप्त होती है जिससे आलोचना भरे माहौल से स्वयं को सशक्त बनाया जा सकता है।

ज्ञान सरोवार अकेडमी की निर्देशिका राजयोगिनी डॉ निर्मला जी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि बच्चों को श्रेष्ठ संस्कारों से सुशोभित करना माँ का महत्वपूर्ण कर्तव्य है जिसे उसे बचपन से बच्चों में भरना चाहिए। परिवार के विचारों को जोड़ने से घर परिवार का माहौल शांतिमय बन जाता है। किसी के कुटिल स्वाभाव, संस्कार को मन में नहीं रखकर उसके प्रति शुभ कामनाओं को स्थान दिया जाना चाहिए। जितना हम पोजिटिव रहेंगे उतना हम विकट परिस्थितियों में भी खुशहाल रह सकेंगे और अपने परिवार को भी खुशहाल रख सकेंगे।

महिला प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी चक्रधारी बहन जी ने अपने मुख्य वक्तव्य में बताया कि नारी शक्ति परिवार की धुरी है जो परिवार में शांति का माहौल कायम रखती है। दहेज लेने की कूप्रथा को समाप्त कर बच्चों में आपसी समन्वय की स्नेहमयी भावनाओं को एक सूत्र में बांधने के कारगर प्रयास करने की जरूरत है। विशेषकर महिलाओं के ऊपर परिवार को एकजुट होकर रखने की जिम्मेवारी होती है। अपने वक्तव्य में उन्होंने दो कहानियो का उदाहरण देकर स्पष्ट किया, पहली कैसे आज बच्चें अपने मां बाप को अपने साथ नहीं रखना चाहते और उन्हें वे अपने परिवार से अलग समझते हैं। दूसरी, एक माँ अपने पति की मृत्यु के पश्चात अपने बच्चों को खूब कड़ी मेहनत करके पढ़ा–लिखाकर बड़ा करती है और बाद में उन्हीं बच्चों को अपनी मां की आदतों पर पैसा खर्च होते देख अपने पैसे की चिंता होती है अपनी मां को उस आदत को छोड़ने के लिए कहा जाता है। उन्होंने कहा कि सभी मां बाप को अपने बच्चों को बचपन से ही अच्छे संस्कार देने के आवश्यकता है। यह विद्यालय जीवन जीने की कला सिखा रहा है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में भाई और बहनें एक–दो के प्रति

स्नेह और सम्मान की भावना रखते हैं जिससे यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय उन्नति को पा रहा है।

शिक्षा प्रभाग की उपाध्यक्षा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्रह्माकुमारी शीलू बहन ने कहा कि किसी की आवश्यक इच्छाओं का गला घोंट कर सुखी नहीं रहा जा सकता। संसार में आधे झगडों का कारण मनुष्य के बोल होते हैं अपनी सोच, अपने बोल, अपने शब्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि परिवार में खुशी लानी है तो स्वयं को बदलना होगा। उन्होंने बताया कि सामान्यतः चार वृत्तियां होती हैं – **पहली**, मैं भी बुरा, तुम भी बुरे, **दूसरी**, मैं अच्छा, दूसरे सब बुरे, **तीसरी**, मैं बुरा, बाकी सब अच्छे और **चौथा**, मैं भी अच्छा, सब अच्छे। परिवार एवं समाज में खुश और सुखी रहने के लिए अपनी दृष्टि वृत्ति बदलने की आवश्यकता है।

महिला प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्रह्माकुमारी डॉ सविता ने मंच का संचालन बहुत कुशलतापूर्वक किया। उन्होंने बीच–बीच में अपने वक्तव्य में कहा कि बच्चों को जिस माहौल मे पाला जाता है वही माहौल उनके जीवन व्यवहार में झलकता है। बच्चों को प्रोत्साहन, प्रसन्नता, आत्मविश्वास, धैर्यता, मधुरता, सौम्य व्यवहार, स्नेह, सहयोग का माहौल देना चाहिए। नम्रता व्यक्ति को सम्मान देती है,श्रद्धा व्यक्ति को मान देती है, योग्यता व्यक्ति को महान बना देती है। स्वयं को सुंस्कारित बनाने से ही बच्चों को श्रेष्ठ संस्कार दिये जा सकते हैं।

दिल्ली से पधारी वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्रह्माकुमारी रानी ने राजयोग का अभ्यास कराते हुए गहन शान्ति की अनुभूति कराई।

खुला सत्र

'सुखी पारिवारिक जीवन में मूल्य' विषय पर पैनल सत्र का आयोजन किया गया जिसमें निम्नलिखित वक्ताओं ने विचार व्यक्त किये। इसके साथ साथ श्रोताओं से बहुत से प्रश्न किये जिनका उत्तर मंच पर बैठे वक्ताओं ने दिये।

1. राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी शारदा, राष्ट्रीय संयोजिका, महिला प्रभाग
2. राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी गीता, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका, शान्तिवन
3. श्रीमति मीनाक्षी गुप्ता, सदस्य, राष्ट्रीय महिला आयोग, नई दिल्ली
4. श्रीमति कमल सिसोदिया, कमांडेंट, सीआरपीएफ, जम्मू
5. श्रीमति ज्योतिलक्ष्मी कुरूप, महाप्रबंधक (सेल्स एवं मार्केटिंग), एमवीआर ग्रुप, गोवा

सर्वप्रथम श्रीमति मीनाक्षी गुप्ता ने बताया कि खुशहाल जीवन की परिभाषा को सीमित नहीं किया जा सकता। पारिवारिक मूल्यों पर बताते हुए उन्होंने कहा कि बच्चों में अच्छे संस्कार बचपन से ही डालने है ताकि वे बड़े होकर एक अच्छे इन्सान बन सकें और समाज को अपना योगदान दे सकें। उन्होंने बताया कि मां–बाप को जैसे देखते हैं बच्चे वैसे ही करते हैं, अतः बच्चों को स्वयं करके ही सिखाना है। आजकल कई बच्चे मां बाप को परिवार का हिस्सा नहीं मानते और उन्हें ओल्ड ऐज होम में रखने का मन बना लेते हैं जबकि भारत सरकार के नियामानुसार मां बाप भी

परिवार का हिस्सा हैं। इस पर कुछ राज्य सरकारों ने नियम बनाया है कि यदि वे अपने बुढे मां बाप को साथ नहीं रखेंगे तो उन्हें जेल भी हो सकती है।

श्रीमति ज्योतिलक्ष्मी ने बताया कि आज न्यूक्लीयर परिवार हो गये हैं और आपस में दूरिया बढ गई है। सुखी पारिवारिक जीवन में सुख शांति के लिए Responsibility, caring, supportiveness, encouragement, optimism, एक दूसरे से bondingness रहे। जबसे वाटसऐप आया है communication gap बढ गया है। संवेदनायें समाप्त हो गई है, हंसना खेलना भूल गये हैं सभी अपने अपने मोबाईल पर बिजी हो गये हैं।

शारदा दीदी ने बताया कि angles सदा हल्के होते हैं आपसे में पारस्परिक स्नेह और प्यार रहेगा तो ईगो समाप्त हो जायेगी। बच्चों को एक दूसरे से कम्पेयर नहीं करना चाहिए और उन पर किसी भी तरह का प्रेशर नहीं डालना चाहिए। Understanding एक दूसरे को समीप लायेगी। acceptance एक दो के लिए respect और faith create करेगी।

गीता दीदी ने बताया पहले तो सारे विश्व को परिवार कहते थे लेकिन धीरे धीरे न्यूकिलयर परिवार बनते गये और अपने मां बाप को परिवार से अलग करते गये। पहले परिवार मिलजुलकर रहते थे लेकिन समय के साथ साथ यह सबकुछ बदलता गया। उन्होंने कहा कि परिवार reality की realization को आपस में एकदूसरे की activity को स्वीकार करते हैं तब communication gap समाप्त हो जाता है। Expectation बुरा नहीं है यह जब limination croSS करता है तो दुख का कारण बन जाता है। जितना self realization accurate है तो दूसरों को आसानी से समझ सकते हैं।

महिला सम्मेलन मे आये अतिथियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनन्द लिया। जोधपुर, पालनपुर, नागपुर, अमरावती के बच्चों मनमोहक गीत, नृत्य, आदि प्रस्तुत कर दर्शको का मन मोह लिया। ज्ञानसरोवर अकेडमी के समर्पित भाईयों द्वारा भी आए आकर्षक एवं आध्यात्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें गीत, कविता एवं मीमीकरी आदि भी शामिल थे। फालना से विशेष रूप से पधारी प्रसिद्ध कवयत्रि कविता बहन ने भी अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन जोधपुर की बहन मीनु द्वारा कुशलतापूर्वक किया।

लेक्चर एवं वर्कशाप सत्र

ज्ञान सरोवर अकेडमी की निर्देशिका राजयोगिनी डॉ निर्मला बहन जी ने अपने विशेष प्रवचन में आध्यात्मिक ज्ञान के जीवन में समावेश एवं राजयोग के अभ्यास से सशक्तिकरण द्वारा व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए नारी की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि यदि मां बाप अनुशासन में रहेगे तो बच्चे भी संगदोष से बचे रहेंगे। सम्मेलन में पधारे महिलाओं के लिए आयोजित कार्यशाला की निम्नलिखित चारों विषयों की

व्याख्या करते हुए उन्होंने सभी प्रतिभागियों को इसमें सम्मिलित होकर अपने विचारों द्वारा अवगत कराने के लिए प्रेरित किया ताकि इस ज्वलंत समस्या का स्थायी समाधान खोजा जा सके।

1. महिला एवं परिवार
2. आध्यात्मिकता एवं आधुनिकता का समन्वय
3. स्नेह, सहयोग एवं विश्वास – समृद्ध परिवार का समन्वय
4. परिवर्तन के समय पर महिलाओं की भूमिका

समापन सत्र

डॉ अनुराधा ने अपन वक्तव्य में बताया कि हम लोग बचपन से ही लडके और लडकियों में भेद करते हैं लडकियों लडकों वाले कार्य नही करने देते। हम यह भूल जाते हैं कि लडके को जन्म देने वाली एक लडकी ही होती है और वो उसे पालपोसकर छः फुट का आदम बनाती है। कहीं बार ऐसा देखा गया है कि मांबाप अपने लडके को पढा लिखाकर बडा आदमी बनाते हैं और एक दिन वही बच्चा उनके दुख का कारण बन जाता है। इसके लिए उन्होंन सिंघानिया ग्रुप के मालिक का उदाहरण देते हुए कहा कि उनके लडके ने उन्हें प्रोपर्टी से बेदखल कर दिया और वो आज दुख का जीवन यापन कर रहे हैं। आज हम अपने बच्चों को मोरल वैल्यू और बचपन से उनमें अच्छे संस्कार नहीं डालते जिसके कारण आज इस प्रकार की घटनायें देखने को मिल रही हैं। उन्होंने आगे बताया कि आज महिला महिला का तिरस्कार कर रही है जिसके कारण दुख बढ रहा है। औरतों को एक दूसरे के लिए स्टैंड होना चाहिए। यह भी देखा गया है कि महिलायें अपना समय गॉसिप में व्यतीत करती है जबकि उन्हें अच्छे विषयों पर चर्चा करनी चाहिए जिससे समाज को नई दिशा दी जा सके। आज समाज में विकृतियां एवं गिरावट का मुख्य कारण है – मोबाईल और इन्टरनेट जिससे मोरल वैल्यू खत्म हो गई हैं। अपने बच्चों को मोबाईल और इन्टरनेट के इस्तेमाल के लिए समय निर्धारित करना चाहिए।

ब्रह्माकुमारी अनिता बहन ने अपने वक्तव्य में बताया कि आज हम सशक्तिकरण की आवश्यकता क्यों पड़ रही है उन्होंने गौरवशाली एवं शक्तिशाली दिनों कोयाद दिलाया। ब्रह्माकुमारीज सशक्तिकरण का जीता जागता उदाहरण है जो कि चरित्र निर्माण और घर घर को स्वर्ग बनाने के लिए जाना जाता है। चरित्र की शक्ति ही विश्व परिवर्तन कर सकती है उसके लिए हमें कोई फिजिकल शक्ति की आवश्यकता नहीं है। लेडिज फर्स्ट का नारा जरूर लगा दिया परन्तु हमें अभी तक बैलेन्स में रहना नहीं आया है इसके लिए हमें आंतरिक बल को बढाने की जरूरत है। राजयोग विद्या द्वारा आंतरिक शक्तियों को जागृत करने से बाहरी समस्या से लडने की ताकत बढ़ जायेगी। आत्मा का अन्दर से तेज क्षींण हो गया है जिसे राजयोग से अपने मनोबल, चरित्रबल और आध्यात्म बल को बढ़ाना है। मुझे अपने घर को स्वर्ग बनाना है

जो मैं कर सकता हूं। हमें किसी को ठसंउम नहीं देना है यह भी कमजोरी है हम demanding हो गये हैं हमें दाता बनना है कोई भी हमें दुख नहीं दे सकता जब तक कि हम उसे ग्रहण ने करें।

डॉ कविता किरण ने कहा कि नारी की महानता का वर्णन सुरज को दिया दिखाने जैसा है। उन्होंने बताया कि आज सभी कहते हैं कि नारी नरक का द्वार है। इसके लिए उन्होंने दोहे में जवाब दिया कि – मत समझो अभिशाप तुम – नारी है वरदान, नत नारी के सामने – ऋषिमुनि और भगवान। नारी की महानता को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। अंत में उन्होंने नारी के संबंध में कविता भी सुनाई जिससे सभी ने बहुत सराहा।

श्रीमति कल्याणी शरण, राज्य महिला आयोग की अध्यक्षा, झारखंड ने बताया कि वे दूसरी बार माउन्ट आबू आई हैं। महिलाओं का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि महिलाओं का हैमियोग्लाबिन हमेशा कम होता है क्योंकि वह पूरे परिवार का ध्यान रखती है और अपना ध्यान रखना भूल जाती है। नारी के पास कोख है, मृातशक्ति है जिससे वह अपने बच्चे को पालपोसकर बड़ा करती है। समाज में आगे बढने के लिए हमें शिक्षित बनना है। महिला के अन्दर बहुत गुण हैं उन्हें बोल्ड बनना चाहिए, कैसे सुरक्षित रहना है यह उसे मालूम होना चाहिए कि वो ही दुर्गा, वो ही लक्ष्मी और वो ही सरस्वती भी है। देवलोक में भी महिलाओं को आगे रखा गया है जैसे सीता राम, राधे कृष्ण आदि। बेटा और बेटी को एक समान समझना चाहिए। बेटी ससुराल जायेगी इस मानसिकता को बदलना नारी का धर्म है। बच्ची क्या चाहती है क्या करना चाहती है उसका साथ देना चाहिए। इस संबंध में उन्होंने बताया कि एक लडकी उनके पास आई अपने पिता की शिकायत लेकर उसने बताया कि उसके पिता उन्हें एयर होस्टेस की नौकरी करने से रोक रहे हैं। संस्था की प्रंशसा करते हुए उन्होंने बताया कि वह यहां बार बार आना चाहती हैं और इस संस्था को नमन करती हूं क्योंकि यह संस्था समाज के नवनिर्माण के लिए बहुत अच्छा कार्य कर रही है।

राजयोग सत्र

महिला सम्मेलन में भाग ले रहे सभी प्रतिभागियों के लिये विशेष राजयोग शिविर का आयोजन दिनांक 20 जुलाई से 23 जुलाई 2019 तक प्रातःकाल में किया गया जिसका सभी ने लाभ लिया और दिल से सराहा। इन सत्रों में निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई

1. स्वयं के आध्यात्मिक अस्तित्व की पहचन
2. परमात्मा की सत्य पहचान
3. राजयोग का आधार एवं विधि
4. काल चक्र का गुह्य रहस्य